ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान

बळीराम शेषेराव चव्हाण

राजनीतिशास्त्र विभाग, विवेकानंद कला, सरदार दलिपसिंह वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

छत्रपती संभाजीनगर

डॉ. सुहास रंगनाथ मोराळे

श्री. सिद्धेश्वर महाविद्यालय. माजलगाव. जि. बीड

परिचय :

हिंदी का विकास क्रमशः अपभ्रंश से शुभारंभ हुआ, जिसकी जानकारी में हम आठयों शताब्दी तक जाते हैं. जिसे हिंदी का आभास कराने वाली अपबंश या पुरानी हिंदी कहा गया है। इस हिंदी साहित्य के प्रारंभ काल को एक हजार वर्ष की मान्यता दी गई है। इसका इतिहास आगरा के विद्वतावर श्री जयकृष्ण खण्डेलवाल को लिखने पर उ.प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन ने रायबरेली में सम्मानित भी किया था। हिंदी साहित्य के परंपरागत काल के इन हजार वर्षों को चार भागों में क्रमानुसार विभाजित किया गया- आदिकाल (800-1400) भक्तिकाल (1400-1700), रीतिकाल (1700-1850) तथा चौथा आधुनिक काल (1900 से वर्तमान तक)। कोलकाता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना और आधुनिक हिंदी का श्रीगणेश वर्ष 1800 में कोलकाता से हुआ। विगत इन्हीं वर्षों में दक्षिण भारत में प्रचलित हिंदी भाषा को 'दक्खिनी हिंदी' नाम से कहा जाने लगा। सर्वप्रथम हिंदी के नामकरण की आधारशिला रखने वाले बहुभाषाविद आदिकालीन कवि अमीर खुसरो की चर्चा न होने से इसका इतिहास ही अपूर्ण कहा जायेगा। अमीर खुसरो का प्रारंभिक नाम अब्दुल हरान था। उनका जन्म एक तुकी परिवार में वर्ष 1253 में उत्तर प्रदेश को पटियाली करने में हुआ था। अमीर खुसरो को बचपन से ही कविता से लगाव था। उन्हें फारसी तथा हिंदी दोनों भाषाओं के जनप्रिय, कवि माना जाता है। डॉ. रामकुमार यम्हें के क्यानुसार, खड़ी भोली में प्रथम लिखने वाले अमीर खुसरो हुए, जिन्होंने अपनी पहेलियों, मुकरियों आदि में इस भाषा का प्रयोग किया। यद्यपि ब्रजभाषा को ही उन्होंने विशेष आश्रय दिया पर उन्होंने खड़ी बोली को भी उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

विश्लेषण : जनसामान्य में कहा जाता है कि अमीर खुसरो ने लगभग 92 घथों की रचना की थी, किंतु उसका कोई प्रामाणिक साक्ष्य नहीं मिलता है। वे अपनी रचना 'गुर्रतुलकमाल की भूमिका में लिखते है कि मैंने अपनी हिंदी

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

कविताएं अपने मित्रों में बिखेर दी है, परंतु इन कविताओं ने कुछ कविताएं सूफी विचार से सराबोर है। खुसरो की दृष्टि में सूफी शब्द का तात्पर्य है कि जो व्यक्ति पवित्र जीवन व्यतीत करते हुए धर्माचरण में लीन रहते थे. सुफी कहलाये। तेरहवी शताब्दी में सर्वप्रथम हिंदी का नामकरण हिन्दवी नाम से अमीर खुसरो ने ही दिया, जो प्रचलन में अपभ्रंश होकर हिंदी नाम से चर्चित हो गया। अमीर खुसरो ने साहित्य में अनेक पहेलियां दोहे. गीत, मुकरियां, कप्याली आदि लिखी जो अभी तक प्रचलन में है। वर्तमान समय में अमीर खुसरो की रचनाओं का जनप्रिय होना उनकी हिंदी निष्ठा की आत्मीय भाव को रेखांकित पक्तियां व्यक्त कर रही है।

'तुर्क हिंदुस्तानियम

मन हिंदी गोयम जवाब।

शक मिस्री ने दारम कज

अरब गोपम सुखन'।।

यानी में हिंदुस्तान का तुर्क हूँ और में हिंदवी में उत्तर देता हूं। मेरे पास मिश्री की मिठास नहीं है कि मैं अरची में बाते करूं। अमीर खुसरो पहला कपि है जिसने समूचे राष्ट्र की भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, वह बड़ी स्वच्छन्दता से संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, ब्रज, उर्दू, फारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसीलिए खुसरो की हिंदी की रचनाएं शताब्दियों बाद भी जनप्रिय और लोक साहित्य की अंग बन गई है। यातायात और संचार माध्यमों के अभाव के युग में संपूर्ण देशवासियों के बीच सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय भावना कैसे संमद हुई? संपर्क भाषा के रूप में माय देश से फैली संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश आदि अपने-अपने काल में संपर्क भाषाएं रहीं है।

वस्तुत हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में जो गौरव प्राप्त हुआ यह किसी राज्याश्रय से या किसी की कृपा से नहीं मिला, देशवासियों ने स्वतः ही उसे प्रदान किया। मुस्लिम शासनकाल में सर्वप्रथम खड़ी बोली हिंदी दक्षिण में ही साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। दिल्ली और उसके आस-पास की भाषा को ही संपर्क भाषा के रूप में मुसलमान शासको ने अपनाया। उन्ही के द्वारा दक्षिण भारत में पहुंची, जिसे फारशी विद्वान फरिश्ता के अनुसार बहमनी राज्य (14वीं शताब्दी) के कार्यालयों में हिंदी जुबान को दक्खिनी हिंदी के नाम से विख्यात हुई हिन्दयी संज्ञा भी ग्रहण की। सल्तनत ने सरकारी जुबान का दर्जा दे रखा था।।

हिंदी पत्रकारिता की भारत के स्वाधीनता संग्राम में अहम् भूमिका थी। उस संग्राम को दर्शन और दिशा देने का काम मुख्यतः पत्रकारिता ने ही किया। तब वह व्यवसाय नहीं था, वृत्ति थी। इसलिए हर प्रकार की कीमत चुकाकर पत्रकारों ने आजादी की लड़ाई जारी रखी। पत्रकार फांसी पर चढे, काले पानी की सज़ा भुगती, जेल गये, कोडे खाए, कुर्की सही। पता नहीं क्या-क्या सहा ? तब पत्रकारिता प्रखर देशभक्ति का दूसरा नाम था। पत्र और पत्रकारों के लिए तब एक ही दुश्मन था - अंग्रेज। एक ही देश था - हिंदुस्तान। एक ही लक्ष्य था- आजादी और एक ही नेता था - पहले तिलक, बाद में गांधी। डेढ़ सौ सालों तक गुलामी में सड़ने वाले इस देश के दिल और दिमाग को सही राह पत्रकारिता ने बताई। उसने यहां की जनता का राजनीतिक संस्कार किया। वर्षों से जड़ जमाकर बैठी हुई सामाजिक बुराईयों को निकाल बाहर करने की कोशिश की। समाज सुधार की कई नई राहें निकाली। पत्रकारिता नेतृत्व भी कर रही थी और सलाह भी दे रही थी।

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

जातिभेद, धर्मभेद, प्रांतभेद या भाषाभेद तब कोई नहीं रखते थे। लोग हर कीमत पर आजादी की जंग लड़ना चाहते थे। हर प्रांत से प्रांतीय भाषाओं में जो भी दो -चार पन्नों का समाचार पत्र निकलता वह ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने से बाज नहीं आता। संघर्ष में पनपती यह नैतिकता और हिम्मत गांधी जैसे नेता की देन थी। नैतिक साहस का पूरे समाज में फैलता यह दौर भी गांधी जी जैसे एक पत्रकार के कारण ही था। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास एक दृष्टि से पत्रकारिता का ही इतिहास है। स्वतंत्रता मिली अवश्य पर स्वाधीनता मिली ऐसा नहीं कहा जा सकता।

स्वाधीनता आंदोलन और पत्रकारिता :

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की अहम् भूमिका थी। स्वतंत्रता आंदोलन की अपनी कुछ विशेषताएं थी। पहली बार सारा देश एक दुश्मन के खिलाफ खड़ा हुआ जो इसके पहले के इतिहास में कभी नहीं हुआ था। दूसरे, संघर्ष के और लड़ाई के जो हथियार उसके पास थे सत्याग्रह - असहयोग - अहिंसा - वह इसके पहले के सजनीतिक इतिहास में न कभी किसी ने प्रयुक्त किये थे, न ही उसके बारे में कभी सोचा तक था। तीसरे, इस बार स्वतंत्रता के संघर्ष में बच्चे, बूढे, औरतें, किसान, मजदूर से लेकर मध्यवर्ग और बुद्धिजीवी तक मैदान में उतरे थे, जो इसके बुद्धिजीवी तक मैदान में उतरे थे, जो इसके पहले के इतिहास में कभी नहीं हुआ था। चौथे, स्वतंतत्रता के साथ -साथ समाज में होने वाली सभी प्रकार की दकियानूसी के खिलाफ एक चौतरफा जंग जारी थी और इस जंग के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों की एक लम्बी फेहरिस्त गांधी जी द्वारा जारी की गई थी, जिस पर हजारों कार्यकर्ता अमल कर रहे थे। संघर्ष और रचना का ऐसा दौर भी देश के इतिहास के लिए अनोखी बात थी। हिंदी पत्रकारिता इस संदर्भ तीन भूमिकाएं निभा रही थी । एक आजादी की जंग, दो समाज में सुधार में, तीन, साहित्य का परिष्कार और इन तीनों स्थानों पर उसने जो काम किया उसे इतिहास कभी भूल नहीं सकेगा।

आजादी की जंग :

सही मायने में इस देश में आजादी की जंग का पहला ऐलान पत्रकारिता ने ही किया। 8 फरवरी 1857 को दिल्ली से अजीमुल्ला खां ने हिंदी और उर्दू में एक छोटा समाचार पत्र निकाला -पयामे आजादी। उसमें उस समय के राष्ट्रगीत की प्रथम पंक्तियां छपी थी,

"हम है इसके मालिक, हिंदुस्तान हमारा,

पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।"

पयामे आजादी की सारी प्रतियां जब्त कर जलायी गयी। कहा जाता है कि इसकी एक प्रति बची जो लंदन में उपलब्ध है। 8 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे को फांसी दी गयी, जिसकी तीव्र प्रतिक्रिया देश में हुई। पयामे आजादी के बाद लगभग एक दशक तक पत्रकारिता में सन्नाटा रहा और फिर एक दौर शुरू हुआ, भारतेंदु हरिश्चंद्र के कवि वचन सुधा से। कवि वचन सुधा का उद्देश्य था "सत्य निज भारत गहे "। तब के अधिकांश पत्रों की शीर्षस्थ पंक्तियां देश और देशहित को प्राधान्य देनेवाली थी। रीतिकाल की समाप्ति तक काव्य ग्रंथों का प्रारंभ ईश्वर तथा सरस्वती वंदना से होता था। आधुनिक काल में वह देश वंदना से होने लगा। सही मायने में स्वदेशी आंदोलन शुरू करने का श्रेय कवि वचन सुधा को जाना चाहिए। पत्रकारिता स्वान्तः सुखाय नहीं, जनहिताय होती थी। युगल किशोर शुक्ल का उदन्त मार्तंड, नीलरतन हलदार का

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

बंगदूत, शिवप्रसाद सितारे हिंद का बनारस अखबार, जैसे पत्र समाचारों को जितनी प्रधानता देते थे, उससे अधिक प्रधानता हिंदुस्थानियों के हित के हेतु को देते थे । प्रथम, दैनिक सुधावर्षण ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने का बहादुर जाह जफर का फरमान छापकर विदेशी सत्ता को खुली चुनौती दी थी।

राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के पूर्ववर्ती। अर्षों में और स्वतंत्रता के बाद के 20-25 वर्षों तक पत्रकारिता और हिंदी साहित्य के केंद्र में भी "स्वतंत्रता" ही विषय था । इस स्वतंत्रता के लिए पत्रकारिता ने जो कीमत चुकायी है उसका अंदाजा आसानी से नहीं लगाया जा सकता । 1900 से 1920 तक तिलक महाराज का और 1920 के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति तक इस क्षेत्र पर महात्मा गांधी का जबरदस्त अधिकार था । अस्तिप्रशीय पत्रकारिता का एक दीर्घ दौर इस काल में चला। युगांतर, गदर, वंदे मातरम, संध्या, स्वराज्य, कर्मयोगी, प्रताप वीर अर्जुन, तेज, मिलाप, कर्मवीर, भारत मित्र इत्यादि केवल नाम नहीं थे, ये देशप्रेम में धधकते अग्नि कुंड थे । युगांतर के कई संपादकों ने जेल भुगती । उसका मूल्य था "फिरंगेर कांचा माथा" । गदर के संपादकों में में लाला हरदयाल और सरदार करतार सिंह थे जिन्हें अपने छः साथियों सहित फांसी की सज़ा हुई थी । विपिन चंद्र पाल और हलदर के वंदे मातरम् ने न केवल बंगाल में बल्कि पूरे उत्तरी भारत में खलबली मचाई थी । 1907 में इलाहाबाद से प्रकाशित स्वराज्य ने तो पत्रकारिता और स्वतंत्रता के इतिहास में पत्रकारिता के साहस और शूरता की एक अद्भुत मिसाल कायम की । शांति नारायण भटनागर के संपादकत्व में निकलने वाले इस पत्र के आठ संपादकों को कुल मिलाकर 125 वर्ष काला पानी की सजा हुई थी। स्वराजपुर को फिर भी संपादक मिलते गये । हर संपादक की सज़ा के बाद, स्वराज्य में इश्तेहार निकलता "संपादक चाहिये, वेतन-दो सूखी रोटी, एक गिलास ठंडा पानी और हर संपादकीय के लिए 20 साल की जेल " । स्वराज को तब भी संपादकों की कमी नहीं पड़ी। राजा राममोहन रॉय, बाबू अरविंद घोष, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी से लेकर युगल किशोर शुक्ल, दुर्गा प्रसाद मिश्र, बाल कृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, अमृत लाल चक्रवर्ती, पराडकर, विद्यार्थी, बाजपेयी, गर्दे से लेकर एक दीर्घ नामावली है, जो जान हथेली पर लेकर लड़ रहे थे । गणेशशंकर विद्यार्थी की हत्या, पं० रुद्रदत्त शर्मा का भूखों मरना, पं० अमृत लाल चक्रवर्ती का कर्जा न चुका पाने के कारण जेल जाना, कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर के पेपर पर लगभग 80 बार कुर्की हुई, ये और इन जैसी कई अस्मानी सुल्तानी संकटों से जूझती हुई पत्रकारिता, अंत में स्वतंत्रता के मुकाम तक पहुंच ही गई थी । इनमे कर्मवीर जैसे कई पत्र थे जिन पर अन्य प्रदेशों में पाबंदी थी फिर भी ये पत्र चोरी-छिपे उन प्रदेशों में पहुंच ही जाते थे ।

सामाजिक सुधार की दिशाएं :

भारतेंदु स्वभाव से कर्मठ धार्मिक थे । वे देश के पतन का मुख्य कारण नास्तिकता मानते थे । एक दृष्टि से कर्मकांड में उनका विश्वास था, पर सामाजिक कुरीतियों पर उन्होंने करारे हमले किए । पं० बालकृष्ण भट्ट ने हिंदू धर्म की पाखडता पर कड़ी टीका टिप्पणी की। भट्ट जी के काल तक, "राष्ट्रीयता" शब्द अपरिचित था, सच्चे अर्थ में वे इस शब्द के जनक हैं। पं० प्रताप नारायण मिश्र ने बाल विवाह और अनमेल विवाह पर, बाबू बालमुकुंद गुप्त ने मारवाड़ी समाज की अ-सामाजिकता

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

पर, गांधी जी ने अस्पृश्यता पर, गणेश शंकर विद्यार्थी ने जाति भेद पर बड़े करारे हमले किए। पत्रकारिता एक और ब्रिटिश सत्ता के साथ लड़ रही थी तो दूसरी ओर अपने ही समाज में विभिन्न कारणों से पनपने वाली दकियानूसी के खिलाफ भी संघर्ष कर रही थी।

पत्रकारिता की और एक विशेषता इस संदर्भ में ध्यान में रखनी होगी । आज समाचार पत्र "ग्राहक" खोजते हैं। तब वे "पाठक" को तैयार करते थे । जनता के सामाजिक और राजनीतिक प्रबोधन का जो काम उस समय पत्रकारिता ने किया वह बेजोड़ था। लोग दूरदराज के देहातों तक तिलक जी के केसरी की और गांधी जी के हरिजन की राह देखा करते। तब पत्रकारिता एक व्रत थी, वृत्ति नहीं। उसका व्यावसायीकरण नहीं हुआ था । पत्रकारिता का सर्वाधिक तेजस्वी रूप स्वतंत्रता संग्राम में ही प्रगट हुआ

1920 से शुरू होने वाले गांधी युग ने पत्रकारिता की एक नई राह बनाई। गांधी जी यह मानते थे कि समाचार पत्र का पहला उद्देश्य है जनता के विचारों को समझना तथा व्यक्त करना, दूसरा उद्देश्य है, जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना तथा तीसरा उद्देश्य है, सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना। खुद गांधी जी ये तीनों उद्देश्य ध्यान में रखकर पत्रकारिता करते थे। बगैर किसी प्रकार की आक्रामक, धाकड़ और भड़काऊ भाषा का उपयोग किये, विरोधियों के जाल को कैसे तोड़ा जाए, इसका नमूना गांधी जी की पत्रकारिता थी। 1826 से 1857 तक और 1857 से 1947 तक जितने समाचार पत्र निकले, सभी राष्ट्रीय संघर्ष में अग्रसर थे ऐसा नहीं कहा जा सकेगा पर जिन्होंने यह भूमिका स्वतंत्रता प्राप्ति तक ईमानदारी से निभाई ऐसे पत्र भी कम नहीं थे। इंडियन ओपिनियन, सत्याग्रही, यंग इंडिया, नव जीवन तथा हरिजन ने जिस सत्यवादी पत्रकारिता की नींव रखी उसका एक सर्वाधिक प्रभाव जरूर था। पत्रकारिता की भी एक जबरदस्त अहिंसक ताकत हो सकती है, उसका प्रमाण इस सत्यवादी पत्रकारिता ने दिया । कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, विकास जैसा 5-8 पृष्ठों का साप्ताहिक चलाते थे, पर उनकी सत्यवादिता और निर्भयता की दाद देश के बड़े से बड़े नेता भी देते थे। उस समय के पत्रकारिता की यह विशेषता थी कि पत्रकार देश के दुर्भाग्य को अपना दुर्भाग्य मानते थे। उनकी साधना का लक्ष्य था। साम्राज्यशाही अभिशाप से मुक्ति। तब के पत्रकार और पत्रकारिता को भी यह गुमान था कि पत्रकार की भूमिका लोकनायक की भूमिका है। आजादी के बाद यह परिदृश्य बदला। यह वह समय था जब पराडकर जी, लोकनायक जयप्रकाश जी को और निराला पं० नेहरू को फटकारते थे। पत्रकारों में ऐसी निर्भिकता अब दुर्लभ है। आज समाज जैसे पत्रकारिता के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है वैसे तत्कालीन पत्रकारिता के साथ नहीं था। उस समाज की राजनीति का संस्कार अविकसित था। स्वतंत्रता आंदोलन की पत्रकारिता ने तत्कालीन समाज में यह संस्कार विकसित किया था।

स्वाधीनता और स्वतंत्रता :

वस्तुतः स्वाधीनता और स्वतंत्रता दो अलग-अलग संकल्पनाएं हैं। 1947 में हमारा स्वतंत्रता संग्राम पूरा हुआ। देश को आजादी मिली। 150 सालों की गुलामी की जंजीरें टूट गयी, पर देश किसी भी अर्थ में आज स्वाधीन नहीं है। स्वाधीनता में, हम किसी भी बात के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं रहते । "स्व" का विस्तार इतना होता है कि वह एक ओर

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

व्यक्ति के साथ तो दूसरी ओर विश्व के साथ अपने आपको जोड़ता है। इस व्यापक "स्व" के साथ अधिकांश लोगों का कोई वास्ता नहीं दिखाई देता। लोग न राष्ट्र के साथ जुड़ते हैं न व्यापक "स्व" के साथ। गांधी जी के स्वराज की संकल्पना से हम लोग और हमारी पत्रकारिता कोसों दूर है। 1924 में प्रताप में विद्यार्थी जी ने लिखा "देश में जो स्वराज्य होगा वह किसी छोटे-छोटे समुदाय का नहीं, धनवान और शिक्षिकों का नहीं, वह होगा साधारण से साधारण आदमी तक का।"

संदर्भ :

१) कुमार, हरिन्द्र, राजभाषा भारती (संपादन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जुलाई सितंबर, २०१४, पृ. क्र.१२

२) मीना, गौतम, स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी, राष्ट्रीय अभिलेखागार जनपथ, नई दिल्ली, २००८, पृ. क्र.४४,४८,५०

३) रिपोर्ट ऑन न्यूज पेपर्स एण्ड पिरियाडिकल्स फाईल, १९४२, नं. ३८

४) International journal of scientific & innovative research studies, शर्मा, मीना, राष्ट्रीय आंदोलन मे हिंदी की भूमिका, vol(3), Issue -11, November 2015

Cite This Article:

चव्हाण ब. श. & डॉ. मोराळे स. र. ***(2024).*** *स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 63–68).

EIIRJ. https://doi.org/10.5281/zenodo.10652587

.